संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक : ०३ ● १६ जनवरी २०१८ माघ कृष्ण पक्ष अमावस्या संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

आर्य समाज के दस नियमों का संदेश

– डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

१. प्रथम नियम में सब सृष्टि का आदि कारण परमेश्वर बतलाया गया है। वही सारे ब्रह्माण को रचने वाला, वही उन उदार्थों में पृथक्–पृथक् गुणों को उत्पन्न करने वाला, वही सब प्रकार के ज्ञान को देने वाला, वह सबसे पहले ही विराजमान है और वह एक ईश्वर ही हो सकता है। जैसे सब पदार्थ किसी चेतन के बनाये हुए हैं, वैसे ही इतने बड़े सूर्य, चन्द्र, तारे, समुद्र, पर्वत्, पृथ्वी, आकाश, वायु, बिजली आदि पदार्थों को रचकर काम में लाने वाला चेतन परमेश्वर कहलाता है। परमेश्वर ही ये सब विद्याएं जगत् में फैली है। उसी ने पहले वेद विद्या को ऋषियों के अन्तःकरण में प्रकट किया। उन वेदों से सब विद्या जगत में फैली और उन विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर ही है।

२. *दूसरे नियम में परमेश्वर कैसा है* यह बताया गया है। उसके हाथ, मुँह, पैर हैं या नहीं, उसके अन्दर क्या शक्ति है, क्या क्या गुण हैं, वह जन्मता है या नहीं, मरता है या नहीं, कभी बूढ़ा होता है या नहीं, किसी से डरता है या नहीं? कभी मैला होता है या नहीं? उससे बढ़कर कोई और है या नहीं? ऐसे प्रश्नों के उत्तर देकर उस परमेश्वर के लक्षण बताये गये हैं। उसे सुख– दुःख नहीं होता। उसका आकार नहीं। वही सब शक्तियों का भण्डार है। वह न्याय करने वाला है। न्याय के द्वारा ही प्राणियों पर दयालु बना हुआ है अर्थात वह पापी को न्याय से दण्ड देकर सैकड़ों अपराधियों को पाप करने से रोकता है, यही उसकी दया है। उसके अतिरिक्ति सब जीवों के लिए वायु, जल, चांद, सूरज आदि बनाये हैं। यह उसकी सबसे बड़ी दया है। वह पापी को भी वायु, जल, आकाश, आदि का लाभ पहुंचाता है।

वह न उत्पन्न होता है, न मरता है। यदि उसे कोई भी उत्पन्न करने वाला हो तो उसके पिता

को ही लोग ईश्वर समझें। इसलिए यह किसी से उत्पन्न नहीं होता है, न उसमें कोई विचार उत्पन्न होता है, न उसका कोई आदि है, न इस जैसा ही कोई और है। यही ईश्वर सबका आधार, सबमें व्याप्त, सबके अन्दर रमा हुआ है। यह बुढ़ापा, रोग, मृत्यु, भय आदि से रहित है। यह नित्य रहना है और सदैव पवित्र रहता है। यह सब सृष्टि उसी ने बनाई, इसलिए हमें उस ईश्वर की उपासना करनी चाहिये।

३. "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

इस नियम में दो वाक्य हैं। पहले वाक्य में बतलाया गया है कि वेद में सब सत्य विद्याएं हैं। दूसरे वाक्य में ऐसी उत्तम पुस्तक वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना सब आर्यो का परम धर्म बतलाया गया है। वेद क्या है? परमेश्वर की वाणी है। कोई भी प्राचीन ग्रन्थ देख लो, सब ही ऋषियों ने अपने–अपने ग्रन्थों में वेद को ईश्वर की वाणी बतलाया है। इस वेद की भाषा भी निराली है, जिसका नाम वैदिक है। संस्कृत से यह मिलती है, पर बहुत सी बातों से संस्कृत में और इसमें भेद होता है। यह भाषा कभी भी किसी देश में न बोली जाती थी, न अब ही बोली जाती है। ऐसी अनोखी भाषा में परमेश्वर ने ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया। यह भाषा ऋषियों ने योगाभ्यास करते हुए ध्यान द्वारा वेदों के अर्थों को परमात्मा की कृपा से जान लिया। उनके अर्थ भी अपने–अपने ग्रन्थों में उन्होंने प्रकाशित किये। वे गन्थ आर्ष इसलिए कहे जाते हैं, क्योंकि वे ऋषियों ने बनाये हैं। वे सब ग्रन्थ सत्य–सत्य बातों से भरे हुए हैं। उन्हीं ग्रन्थों से संसार में सब विद्याओं का आरम्भ हुआ।

अपने गन्थों में ऋषियों ने स्पष्ट लिखा है कि हमें जो–जो ज्ञान या विद्याएं प्राप्त हुई हैं, सब वे वेदों से मिली हैं। वेद के एक–एक मंत्र में विद्याओं के बीज ऐसे ही छुपे हुए हैं, जैसे कि बड़ का बड़ा भारी पेड़ उसके छोटे से बीज में छिपा होता है। उस बीज के बोने से समय पाकर बड़ का पेड़ बढ़कर बहुत फैल जाता है। इसी प्रकार से वेद में से विद्याओं के बीज निकाल–निकाल कर सबसे पहले ऋषियों ने उनका जगत् को उपदेश दिया। निकाल–निकाल कर सबसे पहले ऋषियों ने उनका जगत् को उपदेश दिया। वे ही बीज बढ़कर विद्याओं के फैलने के कारण हुए। इस प्रकार से संसार की सब सत्य विद्याएं वेदों से निकली और फैली हैं– यह निशिचित सिद्ध हो गया है। वेदों से ऋषियों ने जो सद् विद्याएं निकाली, उन्हें चौदह विद्याओं के नाम से पुकारा जाता है। उनके साथ ३४ कलाएं भी वेदों में से ही निकली हैं। इन चौदह विद्याओं और ३४ कलाओं के अन्दर ही सारे जगत् की विद्याएं आ जाती हैं। इसमें सन्देह किसी को होना ही न चाहिये कि सब विद्याएं जो ईश्वर के कहे हुए वेदों में से निकली हैं

शेष पृष्ठ ७ पर

वैदिक पुत्री पाठशाला मुजफ्फरनगर में अथर्व वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

६, ७, ८ जनवरी २०१८ को वैदिक पुत्री पाठशाला मुजफ्फर नगर में अथर्व वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा वेदविदुषी सुलभ शास्त्री, हापुड़ रही तथा वेदपाठ कन्या गुरूकुल नजीबाबाद की छात्राओं ने किया। विद्यालय के प्रबन्धक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार आर्य ने बताया कि प्रतिनिधि प्रातः एवं सायंकाल विद्यालय की छात्राओं, अध्यापिकाओं एवं विद्यालय की कार्यकारिणी के अधिकारियों ने आहुतियाँ प्रदान की साथ ही सुमधुर ईश्वर भक्ति के भजनों द्वारा सभी को प्रभु भक्ति में भावविभोर कर दिया। यह यज्ञ का

कार्यक्रम प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है। पूर्णाहुति पर सभी यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। आर्य मित्र परिवार की ओर से बहुत–बहुत शुभकामनायें।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

सिख विरोधी दंगों की जांच के लिए गठित नये एसआईटी से उम्मीद जगी

दिल्ली में १९८४ के सिक्ख विरोधी दंगों की जांच पर छाये काले बादल अब तक छटते हुए प्रतीत नहीं हो रहे हैं। सुप्रीप कोर्ट ने इन दंगों की जांच के लिए एक और विशेष एस.आई.टी. गठित करने का फरमान जारी किया है। कोर्ट के इस फरमान से दंगों की जांच करने वाले विशेष जांच दल कि दिशा और दशा के बारे में पता चलता है। यह घटनाक्रम कितना पीड़ादायक है कि घटना के ३४ वर्ष गुजरजाने पर अब तक पीड़ित परिवारों को इन्साफ नहीं मिल सका है। सच यह भी है कि प्रभावी परिवारों को कहीं जरा सी भी इन्साफ की उम्मीद दिखाई पड़ती है तो वह रास्ता न्यायपालिका होकर ही गुजरता है। यह कितना दुःखद है कि फरवरी २०१५ में एनडीए सरकार ने एसआईटी का गठन जांच के किया था। बिडम्बना देखिए एसआईटी ने दंगों से सम्बन्धित १८६ मामलों को बिना जांच किए बन्द कर फाइल दाखिल दफ्तर कर दिया।

३१ अक्टूबर १९८४ को तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को उनके सिक्ख सुरक्षा गार्डों द्वारा गोली मारकर हत्या किए जाने के बाद देश की राजधानी दिल्ली के समेत पूरे देश में सिख विरोधी दंगें भड़क गये थे। इन दंगों ३ हजार से अधिक लोग मारे गये थे।

इन दंगों को भड़काने के लिए कांग्रेस के तत्तकालीन कद्दावर नेताओं की भूमिका खुलकर सामने आयी थी।

नानावटी कमेटी से लेकर जस्टिस रंगनाथ मिश्र आयोग और विशेष चांज दल गठित किए गये। पर दंगा पीड़ितों को न्याय नहीं मिल सका। इस मामलें में हो रही जांच में किस तरह पक्षपात हुआ और किस तरह प्रभावशाली लोगों को बचाने की कोशिश की गई। यह बात किसी से छिपी नहीं रह गयी। इसका उदाहरण २०१३ में आया वो फैसला है, जिसमें कांग्रेस नेता और तत्कालीन सांसद सज्जनकुमार को दिल्ली के छावनी वाले इलाके में दंगे भड़काने के मामले में साक्ष्य के अभाव में बइज्जत बरी कर दिया गया। जबकि उन्हें साफ तौर पर भीड़ को भड़काते हुए देखा गया था। इस मामलें में अभियोन की गंवाह जगदीश कौर के पति और बेटे सहित ५ रिश्तेदारों को दंगाइयों ने मौत के घाट उतार दिया था। दुर्भाग्य देखिए कि अभियोजन यह साबित नहीं कर सका कि सज्जन कुमार को भीड़ को भड़काते हुए देखा गया है।

इन दंगों के मामलों ने सी.बी.आई., पुलिस और सरकार द्वारा गठित एसआईटी की विस्वशनीयता को कटघरे में खड़ा कर दिया है। ऐसी दशा में सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित नई एसआईटी की चुनौतियों को समझने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। जिसे एक बार फिर से दंगों की टूटी कड़ियों को जोड़ने की कोशिश करनी होगी। जब तक पीड़ित पक्षों को न्याय नहीं मिल जाता है। हमारे जहन में इन दंगों की याद रात दिन कौधती रहेगी। हमारी सामूहिक जिम्मेदारी सामूहिक चेतना को झकझोरती रहेगी।

सर्वोच्च अदालत द्वारा विशेष जांच दल गठित किए जाने के फैसले से पीड़त पक्षों में न्याय मिलने की उम्मीद की किरण जगी है। उन्हें यह महसूस हो रहा है कि आज नहीं तो कल देर सबेर ही सही उन्हें इन्साफ जरूर मिलेगा। इससे पूर्व सिख दंगों को लेकर पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा जिस तरह खाना–पूर्ति की गयी। उसकी भी कलई खुलकर दुनिया के सामने आ चुकी है। पर बेशर्म राजनेताओं को तो राजनीति की रोटी सेकने की आदत सी बन गयी है। पर कहते है वक्त बदलता है। अब न्यायालय ने उम्मीद की नई किरण जगा दी है। — सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

विवाहित स्त्री जो विवाहित पति धर्म के अर्थ परदेश गया हो तो आठ वर्ष, विद्या और कीर्ति के लिए गया तो छः और धनादि कामना के लिए गया हो तो तीन वर्ष तक बाट देख के, पश्चात् नियोग करके सन्तानोत्पत्ति कर ले। जब विवाहित पति आवे तब नियुक्त पति छूट जावे।।१।। वैसे ही पुरूष के लिये भी नियम है कि वन्ध्या हो तो आठवें (विवाह से आठ वर्ष तक स्त्री को गर्भ न रहै), सन्तान होकर मर जायें तो दशवें, जब-जब हो तब-तब कन्या ही होवे पुत्र पन हों तो ग्यारहवें वर्ष तक और जो अप्रिय बोलने वाली हो तो सद्यः उस स्त्री को छोड़ के दूसरी स्त्री से नियोग करके सन्तानोत्पत्ति कर लेवे।।२।।

वैसे ही जो पुरूष अत्यन्त दुःखदायक हो तो स्त्री को उचित है कि उस को छोड़ के दूसरे पुरूष से नियोग कर सन्तानोत्पत्ति करके उसी विवाहित पति के दायभागी सन्तानोत्पत्ति कर लेवे। इत्यादि प्रमाण और युक्तियों से स्वयंवर विवाह पति से उत्पन्न हुआ पुत्र पिता के पदार्थों का स्वामी होता है वैसे ही 'क्षेत्रज' अर्थात् नियोग से उत्पन्न हुए पुत्र भी पिता के दायभागी होते हैं।

अब इस पर स्त्री और पुरूष को ध्यान रखना चाहिए कि वीर्य और रज को अमूल्य समझें। जो कोई इस अमूल्य पदार्थ को परस्त्री, वेश्या वा दुष्ट पुरूषों के संग में खोते हैं वे महामूर्ख होते हैं। क्योंकि किसान वा माली मूर्ख होकर भी अपने खेत वा वाटिका के बिना अन्यत्र बीज नहीं बोते। जो कि साधारण बीज और मूर्ख का ऐसा वर्तमान है तो जो सर्वोत्तम मनुष्यशरीर रूप वृक्ष बीज को कुक्षेत्र में खोता है वह महामूर्ख कहाता है, क्योंकि उसका फल को नहीं मिलता और 'आत्मा वै जायते पुत्रः' यह ब्राह्मण ग्रन्थों का वचन है।

यह सामवेद के ब्राह्मण का वचन है।

हे पुत्र! तू अंग-अंग से उत्पन्न हुए वीर्य से और हृदय से उत्पन्न होता है, इसलिए तू मेरा आत्मा है, मुझ से पूर्व मत मेरे किन्तु सौ वर्ष तक जी। जिस से ऐसे-ऐसे महात्मा और महाशयों के शरीर उत्पन्न होते हैं उस को वेश्यादि दुष्ट क्षेत्र में बोना वा दुष्टबीज अच्छे क्षेत्र में बुवाना महापाप का काम है।

प्रश्न- विवाह क्यों करना? क्योंकि इस से स्त्री पुरूष को बन्धन में पड़के बहुत संकोच करना और दुःख भोगना पड़ता है इसलिए जिस के साथ जिसकी प्रीति हो तब तक वे मिले रहें, जब प्रीति छूट जाय तो छोड़ देवें।

(उत्तर) यह पशु पक्षियों का व्यवहार है, मनुष्यों का नहीं। जो मनुष्यों में विवाह का नियम न रहै तो गृहाश्रम के अच्छे-अच्छे व्यवहार सब नष्ट भ्रष्ट हो जायें। कोई किसी की सेवा भी न करे। और महाव्यभिचार बढ़ कर सब रोगी निर्बल और अल्पायु होकर शीघ्र-शीघ्र मर जायें। कोई किसी से भय वा लज्जा न करे। वृद्धावस्था में कोई किसी की सेवा नहीं करे और महाव्यभिचार बढ़ कर सब रोगी निर्बल और अल्पायु होकर कुलों के कुल नष्ट हो जायें। कोई किसी के पदार्थों का स्वामी वा दायभागी भी न हो सके और न किसी का किसी पदार्थ पर दीर्घकालपर्यनत स्वत्व रहै। इत्यादि दोषों के निवारणार्थ विवाह ही होना सर्वथा योग्य है।

प्रश्न- जब एक विवाह होगा एक पुरूष को एक स्त्री और एक स्त्री को एक पुरूष रहेगा जब स्त्री गर्भवती स्थिररोगिणी अथवा पुरूष दीर्घरोगी हो और दोनों की युवावस्था हो, रहा न जाय तो फिर क्या करे?

उत्तर- इस का प्रत्युत्तर नियोग विषय में दे चुके हैं। और गर्भवती स्त्री से एक वर्ष समागम न करने के समय में दीर्घरोगी पुरूष की स्त्री से न रहा जाय तो किसी से नियोग करके उस के लिए पुत्रोत्पत्ति कर दे, परन्तु वेश्यागमन वा व्यभिचार कभी न करे।

जहाँ तक हो वहाँ तक अप्राप्त वस्तु की इच्छा, प्राप्त का रक्षण और रक्षित की वृद्धि, बढ़े हुए धन का व्यय देशोपकार करने में किया करें। सब प्रकार के अर्थात् पूर्वोक्त रीति से अपने-अपने वर्णाश्रम के व्यवहारों को अत्युत्साहपूर्वक प्रयत्न से तन, मन, धन से सर्वदा परमार्थ किया करें। अपने माता, पिता, शाशु श्वशुरकी अत्यन्त शुश्रूषा करें। मित्र और अड़ोसी पड़ोसी, राजा, विद्वान वैद्य और सत्पुरूषों से प्रीति रख के और जो दुष्ट अधर्मी हों उनसे उपेक्षा अर्थात् द्रोह छोड़ कर उनके सुधारने का प्रयत्न करें। जहाँ तक बने वहां तक प्रेम से अपने सन्तानों के विद्वान् और शुशिक्षा करने कराने में धनादि पदार्थों का व्यय करके उनको पूर्ण विद्वान् सुशिक्षायुक्त कर दें और धर्मयुक्त व्यवहार करके मोक्ष का भी साधन किया करें कि जिसकी प्राप्ति से परमानन्द भोगें। और ऐसे-ऐसे श्लोकों को न मानें। जैसे-

पतितोऽपि द्विजः श्रेष्ठो न च शूद्रो जितेन्द्रियः।
निर्दुग्धा चापि गौः पूज्या न च दुग्धवती खरी।।१।।
अश्वालम्भं गवालम्भं संन्यासं पलपैत्रिकम्।
देवराच्च सुतोत्पत्तिं कलौ पञ्च विवर्जयेत्।।२।।
नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते।।३।।

(ये कपालकल्पित पाराशरी के श्लोक हैं।)

— क्रमश :

धरोहर

आर्य समाज के मिशनरी उपदेशक–

श्री पं० हरपाल शास्त्री वेद वाचस्पति

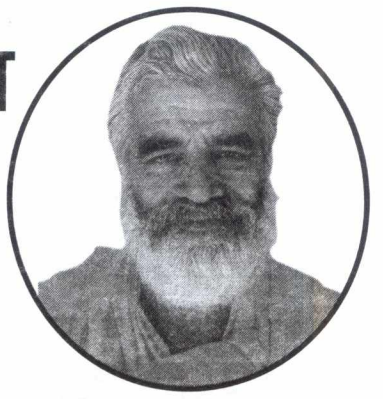

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

गुरूकुलीय परम्परा के उद्गाता, यज्ञ परम्परा के सम्पोषक, वेद, दर्शन, गीता, रामायण, व्याकरण, साहित्य पर अधिकार पूर्वक प्रवक्ता, वेद वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत श्री पं० हरपाल जी शास्त्री के नाम से प्रसिद्ध मु० नगर जिले के भवीसा ग्राम में पैदा हुए थे अपने बचपन में आर्य महाविद्यालय किरठल जिला मेरठ, उ०प्र० जो सम्प्रति बागपत जिले में आ गया है में शिक्षा प्राप्त की आर्यजगत् के मनीषी श्री प० जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी के चरणों में बैठकर संस्कार, वेद ज्ञान का अध्ययन किया। आपकी वाणी अतिमाधुर्य से युक्त थी आप धारा प्रवाह भाषण काल में निपुण थे। महात्मा विदुर जी ने लिखा है–

विद्या वपुषा वाचा वस्त्रेण विभवेन च।

यह श्लोक आपके लिए ही लिखा गयाा हो ऐसा प्रतीत हो रहा है आपकी विद्या, आपका सुन्दर स्वरूप लम्बा शरीर–मधुरता ओजस्विक युक्त वाणी, भारतीय वेशभूषा में धेती कुर्ता पहिन कर शोभायमान होकर, मंच की शोभा बढ़ाते थे आर्थिक दृष्टि से भी प्रभु की कृपा से सदैव अलंकृत ही रहे आपके बेटे सम्प्रति प्रिटिंग प्रेस चला रहे है आपके बड़े भाई श्री निरंजन देव जी शास्त्री आर्य प्रतिनिधि पंजाब में वेद प्रचार अधिष्ठाता पद पर लम्बे समय तक रहे है उनके पुत्र श्री हर्ष देव आचार्य गुरूकुल गा०बाद के आचार्य रहे हैं और इनकी बहिन भी कन्या गुरूकुल सासनी की स्नातिका श्रीमती सत्यवती शास्त्री हैं इस प्रकार पूरा परिवार आर्य समाज और वेद प्रचार के प्रति समर्पित रहा है उसके मूल में गुरूकुल किरठल है जिसने कीर्तिस्थल कहा करते थे और सिद्धान्ती जी की प्रशंसा किया करते थे यही से श्री रघुवीर सिंह शास्त्री जो सांसद भी रहे और सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री रहे श्री सोमपाल शास्त्री जी के पिता जी थे ये भी किरठल गुरूकुल के स्नातक रहे हैं ऐसे सैकड़ों आचार्य स्नातक इस विद्यालय ने दिये हैं जो अभी तक वेद प्रचार परम्परा का पालन कर रहे हैं पूज्य गुरूवार स्वामी मुनीश्वरानन्द जी बताया करते थे कि एक बार एक शास्त्री जो किरठल के ही स्नातक थे उसके विवाह संस्कार में जाने का अवसर मिला उसमें ४० शास्त्री थे जो वेदपाठ मन्त्रोच्चारण कर रहे थे। उन्हें अच्छा लगा ऐसा ही वे गुरूकुल ततारपुर के स्नातक के लिए कामना किया करते थे। अस्तु। ऐसे विद्यालय के स्नातक श्री हरपाल जी शास्त्री वेद प्रचार आर्य सामज के लिए वेद, प्रचार के लिए यज्ञ परम्परा के लिए वे सदैव समर्पित रहते थे उस समय फोन की व्यवस्था नहीं थी उत्सव के लिए स्वीकृति हेतु जबाबी पोस्ट कार्ड लिखा जाता था ताकि उत्तर आने में विलम्ब न हो फिर भी उनका पत्र प्रायः विलम्ब से इसलिए आता था कि वे प्रायः बाहर ही रहते थे जब घर पर आ जाते थे तब उत्तर लिखा करते थे उनका उत्तर लिखने का तरीका भी बड़ा विचित्र था जैसे हमने लिखा १०, ११, १२ मार्च को उत्सव में आप आने के लिए अपनी अमूल्य स्वीकृति प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे ऐसी हमें पूर्ण आशा है.. उधर से उत्तर के रूप में आता था–

आचार्य जी! आपका पत्र मुझे मिला मैं जब हरयाणा से वापस आया अभी मुझे मेरठ जाना है वहां से गढ़ होकर स्याना उत्सव है फिर वहीं से खुर्जा जाना है आपके यहां मैं १० ता० में ही आ जाऊंगा आपके बाद मुझे मुरादाबाद होकर रामपुर जाना है बरेली से भी पत्र आया था पर मैं अमरोहा से विजनौर मु० नगर होकर घर पर आ जाऊंगा, अगले महीने भी एक दिन खाली नहीं है पर कोई बात नहीं आपके यहां जरूर आऊंगा स्वामी जी को मेरी नमस्ते जरूर कहना– आपका वेद सेवक हरपाल शात्री वेद वाचस्पति।

इस प्रकार की आपकी शैली मधुर भाषा में पढ़कर लोग अति प्रसन्नता अनुभव करते थे। स्याना आर्य समाज में प्रातः प्रतिवर्ष आते थे वहां पर २ परिवार ऐसे हैं जो उनसे वेदपारायण यज्ञ भी कराते थे वहीं पर १९६८ में पहला परिचय था वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी जी गुरू जी थे आप प्रवचन किया करते थे प्रवचन शैली माधुर्य युक्त एवं सरल शैली में हुआ करती थी वेदमन्त्र की व्यवस्था करते थे गुरूकुल ततारपुर के उत्सवों पर भी प्रायः प्रति वर्ष ही आते थे ग्रामवासी उनके प्रवचन को ध्यान पूर्वक सुनते थे उनका भाषण शुरू करने का भी एक नया तरीका था जैसे आज मैं आपको क्या सुनाऊं बच्चों को देखकर मन करता है शिक्षा विषम पर बोलूं और पढें लिखे लोगों को देखकर मन करता है मोक्ष विषय पर बोलू कुछ बूढे भी बैठें हैं मन करता है परिवार पर ही सुनाऊँ मातायें बैठी है तो मातृ शक्ति भी ठीक रहेगा चलो आज मातृमानपितृमान आचार्यवान् पुरूषोंवेद'' पर ही सुना देता हूँ–

ऐसा कहकर अपना भाषण प्रारम्भ किया करते थे और उसे लोगों के मन पर विशेष प्रभाव डालते थे वे महारानी मदालसा की कहानी सुनाकर माता जो चाहेगी सन्तान का वैसा ही निर्माण करेगी महारानी मदालसा के चार पुत्र हुए पहले तीन पुत्रों को सन्यासी बना दिया क्योंकि प्रतिदिन लोरियां सुनाती –

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि।
संसार माया परिवर्तितोऽसि।।

इस प्रकार तीन पुत्र सन्यासी बन गए तब राजा ऋतुध्वज ने हाथ जोड़कर कहा महारानी जी एक पुत्र तो राज्य चलाने के लिए तैयार करो तब चतुर्थ पुत्र राजा बना जिसका नाम अलर्क था यह भाषण लगभग १ घण्टा बोलते थे और पिता की प्रशंसा में भारवि की कहानी सुनाया करते थे फिर आचार्य के विषय में गुरू शिष्य का सम्बन्ध सुनाकर लोगों को भाव विभोर कर दिया करते थे आपके भाषण की शैली से लोग सदा प्रभावित रहते थे। गुरूकुल ततारपुर के कार्यक्रमों में आप प्रायः आते तो ब्रह्मचारियों को प्रेरणा सूत्र सुनाकर कहते थे कि देखो ब्रह्मचारी जी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आपके और हमारे ऊपर कितना उपकार किया है सारे जीवन दिनरात उनके सिद्धान्त और वेदों का प्रचार करते रहेंगे तब भी हम उनका ऋण उतार नहीं सकते कई जन्म जन्मान्तरों का अवसर प्रभुजी दें तो कुछ बात बन सकती है पूछो क्यों? क्योंकि हमारा समाज में कोई अस्तित्व ही नहीं था आज हम वेदवाचस्पति हो गए वेदपाठ करते हैं वेद प्रचार में वेद कथायें करते हैं लोग बड़ी श्रद्धा से सुनते हैं कौन वेद की हमसे चर्चा सुनता? हम तो खेतों में खुरपा दरांती लेकर काम करते बड़े होकर हल चालते चलाते ही मर जाते आज समाज ने जो सम्मान दिया है बड़े–बड़े सेठों के घर जाकर हम ठहरते हैं भोजन करते हैं यज्ञ करते हैं उपदेश करते हैं फिर आशीर्वाद देते हैं बाद में वे हमें नमन करते हैं और दक्षिणा देकर हमारा उपकार मानते हुए कहते हैं कि मुनः शीघ्र दर्शन देना जी महाराज। इतना सुनकर हमारी आंखों में आत्मीयता से अश्रु आने लगते हैं और हम एक बार गुरूवर महर्षि जी के प्रति भावविभोर होकर सोचते हैं कि यदि हमें गुरूकुलों में पढ़ने का अवसर न मिलता तो यह सम्मान हमें सातजन्मों में भी नहीं मिल पाता इस ऋण को हम कैसे उतार सकेंगे? कदापि नहीं।

अतः ब्रह्मचारियों आपको बहुत अच्छा अवसर मिला है इसे यदि आपने आलस्य प्रमाद में आकर निकाल दिया तो फिर आप सारे जीवन हाथ मलते ही रह जाओगे। उनके भाव और भाषण का प्रभाव होता कि हम उनके स्वप्नों जैसे ही सपना देखते लग जाते और पढ़ाई में अथवा दिनचर्या में कठोरता के कारण आई हुई निराशा के बादल छंट जाते थे और एक दिव्य प्रकाश आकर प्रेरित करने लगता था। बार–बार उनकी प्रेरणा से सैकड़ों छात्रों के जीवन में परिवर्तन आया और वे शास्त्री आचार्य बन गए।

उनकी अपनी दिनचर्या भी बड़ी व्यवस्थित थी प्रातः काल उठकर दूर निकल जाते पहले घरों अथवा गुरूकुलों में शौच आदि की व्यवस्था नहीं थी दूर जंगल में ही जाना पड़ता था फिर

शेष पृष्ठ ६ पर

अन्त्येष्टि संस्कार प्रबन्धन को लेकर आर्यसमाज से बृहद् हिन्दू समाज की अपेक्षा–एक वस्तुपरक विमर्श

संकलनकर्ता: भावेश मेरजा

(भूमिका: गत सप्ताह एक आर्यसमाज– हितेच्छु प्रबुद्ध वैज्ञानिक ने फेसबुक पर अपने एक सहकर्मी के अन्त्येष्टि संस्कार के प्रसंग का विवरण प्रस्तुत किया जिसमें आर्यसमाज का भी उल्लेख किया गय था। उनकी इस पोस्ट को पढ़कर कई अन्य आर्यसमाज–हितेच्छु व्यक्तिओं ने इस पर अपनी–अपनी टिप्पणी व्यक्त की। आर्यसमाज के सदस्यों, नेताओं तथा विद्वानों को इस विषय पर मन्थन करने की महती आवश्यकता है, जिससे आर्यसमाज को अधिकाधिक समाज–उपकारक किया जा सके– इस उद्देश्य से विमर्श को संकलित कर यहां प्रस्तुत किया जाता है। –भावेश मेरजा)

आज एक कालेज (सहकर्मी) की असामयिक मौत के बाद उसके शव को मोर्चरी में ले जाया गया। मोर्चरी में आए हुए आज के केसेस में दो आत्महत्या वाले थे। उनकी कहानी जानकर लगा कि हम अपनी जिन्दगी को कितने सस्ते में निबटा दे रहे हैं और हमारे समाज ने हमारे जिन्दा रहने को कितना मुश्किल व महंगा बना दिया है। खैर, आज जो मैं लिखने जा रहा हूँ उसका विषय कुछ और है। जब अन्दर सहकर्मी का पोस्ट मार्टम चल रहा था तो बाहर उसके परिजनों व वहां उपस्थित अन्य सहकर्मियों के वार्तालाप में मुझे 'आर्यसमाज' शब्द सुनाई दिया। मैं भी उनके पास पहुंच गया और मालूम करने पर पता चला कि परिजन चाहते हैं कि दाह संस्कार आर्यसामाजिक रीति से सम्पन्न हो। हालांकि वो पौराणिक थे लेकिन जवान मौत होने कारण वह कोई तेहरामी/मृतक भोज आदि नहीं करना चाहते थे और तीन दिनों में ही हवन आदि कराकर जल्द से जल्द इसका समापन चाहते थे। इसके लिए उन्होंने निगमबोध घाट पर व्यवस्था कराने के लिए किसी को बोल भी दिया था। मैंने पूछा कि क्या किसी आर्यसामाजिक पण्डित (पुरोहित) की व्यवस्था करनी है तो बताया गया कि नहीं पण्डित वहीं निगम बोध घाट पर उपलब्ध होते हैं और वहां पर इस संबंध में बात कर ली गई है। मुझे बड़ा सुखद आश्चर्य और संतोष हुआ कि चलो आर्यसमाज ने ऐसी जरूरत की जगह तो अपनी उपस्थिति बनाई हुई है। करीब ४ बजे शाम को हम निगमबोध घाट पहुंचे तो हमारी एम्बुलेंस के पास तिलक लगाए और गुटखा चबाते हुए एक दो लोग से आकर खड़े हो गये। उन्हें देखकर मेरे मृत सहकर्मी के भाई ने मुझसे पूछा कि ये कौन लोग हैं। तो थूक गटकते हुए उन्होंने बताया कि हम पंण्डित हैं और हम संस्कार कराएंगे। मैंने कहा कि लेकिन इन्होंने तो संस्कार के लिए शायद अलग से किसी पण्डित जी से बात हुई है? तो उनमें से एक पण्डित बोला कि हां हम ही तो वो हैं और आर्यसामाजिक रीति से हमें ही कराना है। मुझे फिर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आर्यसामाजिक पुरोहित भी ऐसे टाइप के दिखने लगे आजकल। फिर मुझे लगा कि शायद ये मजदूर टाइप के पुरोहित होगें और पौराणिक व आर्यसामाजिक दोनों ही रीतियों से संस्कार कराकर पैसा कमाते होंगे। खैर, १ घण्टे बाद मृतक को स्नान आदि कराया गया और घर परिवार वालों को संकेत से यह संदेश भी दिया गया कि जिसे जो दक्षिणा देनी हो वह दे दे। उसके बाद दाह संस्कार आरम्भ हुआ जिसमें रामनाम सत्य है, सत्य बोलो गत्य है जैसा कुछ उसने १५–२० बार बोला व बुलवाया और ११ बार गायत्री मंत्र का उच्चारण किया। इसके अलावा किसी भी मंत्रादि का पाठ नहीं किया गया। इस तब कर्मकाण्ड को वहां उपस्थित हर व्यक्ति आर्यसामाजिक रीति से सम्पन्न होता हुआ समझता रहा और मैं मन ही मन सोचता रहा, कि ये आर्यसमाज के साथ अन्याय हो रहा है या आर्यसामज इन अनभिज्ञ व शोकातुर परिजनों के साथ अन्याय कर रहा है। खैर जो भी हो, आर्यसमाज अमर रहे!

उपर्युक्त मूल पोस्ट पर प्राप्त कतिपय महत्वपूर्ण टिप्पणियां–

१. मुझे लगता है कि ऐसे अयोग्य बहुरूपिये "पण्डित" दोनों – आर्यसमाज अपने आधिकारिक पुरोहितों की सेवा वहां उपलब्ध करा सकता तो ऐसा नहीं होता।

२. बिल्कुल... आर्यसमाज को अपनी सेवाएं सुलभ बनानी चाहिए। दिल्ली नगर निगम से बात करे वहाँ अपने दो पुरोहितों की उपस्थिति का प्रबन्ध किया जा सकता है।

३. आर्य समाज में कोई भी योग्य पुरोहित कार्य नहीं करते हैं... न उन्हें यथायोग्य दक्षिणा मिलती है न सम्मान। मैंने बहुतों को पुरोहिताई छोड़कर अन्य कार्य करते देखा है।

४. बिल्कुल सही कहा, अभी भी बहुत से लोगों की आर्य समांज में बहुत श्रद्धा है किन्तु आर्य समाज की ही पहुंच वहां तक नहीं हो पाती। बहुत से पदाधिकारी भी वक्त जरूरत पड़ने पर दैनिक यज्ञ या विशेष यज्ञ या संस्कार नहीं करा पाते। ईमानदार एवं योग्य पुरोहित भी कम ही है लेकिन है।

५. सादर बहुत कठोर सत्य बताता हूं' हमने जिन्हें आंख खुलते अच्छे धार्मिक आर्यसामाजी पाया, वे पुरोहित बनकर भ्रष्ट हो गये। यहां तक कि अपने यजमानो' के समक्ष आर्यसमाज के घनघोर निन्दक हो गये। इसमें भी कहीं न कहीं भ्रष्टाचार घुस आया है। पुरोहिताई के कारण कई लोगों को पतित होते देखा गया है। इसमें भी शुचिता आवश्यक होती हैं। यही नहीं है तो यह व्यवसाय की भांति ही है। अपरिग्रह विलुप्तप्राय है। इसमें एक दूसरा उदाहरण स्व० आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का हमारे समाने हैं । वे कहीं भी हवन इत्यादि कराते थे तो दक्षिणा नहीं लेते थे। कहीं बोलने जाते थे तो भी किराया अपनी जेब से ही देते थे। अपने महर्षि दयानन्द सरस्वती शिशु मन्दिर का उद्घाटन करने मैंने उनको विशेष तौर पर आमन्त्रित किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने दक्षिणा ली और बाद में दक्षिणा जितनी राशि रखकर हमारे शिशु मन्दिर का तुरन्त वापस कर दी! मुजफ्फरनगर तक मैं उनके साथ जाता था लेकिन अपना किराया स्वयं देते थे। अन्तिम बार जब आप हमारे घर से अपने गांव लौटे तो मैं मुजफ्फर नगर तक उनके साथ जा रहा था तब मैंनें उनका किराया देने को जोर दिया तो नाराज होकर बोले– देखो!.. जी, यदि मुझे अपने यहां नहीं बुलाना है तो मेरा किराया दे दीजिए! ८० के उपरान्त वे अकेले सिद्धान्तों पर बोलने जाया करते थे और कभी किसी से रूपया नहीं लेते थे। आप पौराणिक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे परन्तु आपकी गजब की सैद्धान्तिक समझ और सैद्धान्ति आचरण चमत्कृत कर देता था। आपका बड़ी आयु में भी भोजन युवकों जैसा था अर्थात् घी, दूध आदि को बड़े चाव से लेते थे। पाचन शक्ति बहुत अच्छी थी। दोनों समय सन्ध्या करते थे और कहीं न कहीं वैदिक उपदेश देने जाते थे। अधिकतर धर्म प्रचार के लिए यायावर ही रहा करते थे। वैदिक व्याकरण के जानने वाले आप हमारे इधर एकमात्र वैयाकरण थे। अस्तु! क्षमा चाहूंगा विषय हटकर लिखने के लिए। इस बहाने मुझे आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री का स्मरण हो आया था।

६. बहुत लज्जाजनक स्थिति में रख दिया है आर्यसमाज को।

७. विवरण पढ़कर कष्ट हुआ कि आर्य सामाजिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार की चाह होते हुए भी परिवार जन ठगे गये। जी हां, मेरी दृष्टि में तो यही ठगी ही है। आर्य सामाजिक पण्डित उस समय उपलब्ध नहीं हुआ इसके कारण हो सकते हैं–पहला यह कि परिवार जन सही लोगों से सम्पर्क ही नहीं कर पायें और "शमशान के ठगों" द्वारा ठगे गयें। दूसरा कारण यह कि आर्यसमाज अपने पुरोहित की सेवा उपलब्ध कराने में असफल रहा। और इस स्थिति में बिडंबना यह कि निगमबोध श्मशान घाट का कुछ प्रबन्धन कार्य दिल्ली के बड़े आर्यसमाज के अधीन है। कौन सा कार्य और कौन सा समाज है, यह स्मरण नहीं, परन्तु ऐसा वहां पट्टिकाओं पर लिखा देखा है। निगमबोध पर आर्यसामाजिक अन्त्येष्टि यज्ञ के लिए कुछ वेदियां अवश्य हैं।

६. आजकल निगम बोध घाट का प्रबन्ध किसी आर्य समाज के पास नहीं है।

१०. पुरोहिताई के कारण व्यक्ति का पतनोन्मुख हो जाना काफी हद तक स्वाभाविक है और यह बात भी सत्य है कि जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध होना भी और यह बात भी सही है कि जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध होना भी आवश्यक है। वह भी सम्भव है कि ऐसी दशा में व्यक्ति जो भी पहले या आसानी से मिल जाता है उसी पर भरोसा कर लेता है या कहें कि करना पड़ता है। लेकिन दूसरा कारण भी सत्य ही है क्योंकि अब वहां पर किसी भी आर्यसमाज आदि के नाम या सम्पर्कसूत्र की पट्टिका आदि नजर नहीं आती।

११. वैसे यदि आर्यसमाज की कोई संस्था उन इच्छुक गृहस्थों को जिनके पास अपनी आजीविका का स्थायी प्रबन्ध है, कर्मकाण्ड के कार्यों के लिए प्रशिक्षित करे और उनको संस्कार आदि कराने के १०–२० अवसर प्रदान कराके व्यवहारिक ज्ञान दें, तो इस तरह के गृहस्थ जहां और जब संभव हो अपनी सेवाऐ देकर आर्यसमाजों का बोझ भी कुछ हद तक कम कर सकेंगे। और इन आवाराओं से तो अच्छा ही संस्कार करा देंगे।

जीवन का हिसाब

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फर्तिं समावह।।
(अर्थव ३.२४.५)

१. (शतहस्त) सैकड़ों हाथों वाले! (सम्.आ.हर) सम्यक् आहरण कर प्रचुर धन कमा।

२. सहस्र हाथों वाले। (सम् किर) सम्यक् बिखेर, प्रचुर दान कर।

३. यहां किये की (कृतस्य) (कार्यस्य) किये जाने वाले की बुद्धि उन्नति विकास को आवाहन कर जाँच पड़ताल कर।

'इह' का सामान्य अर्थ है यहाँ। यहाँ पर तात्पर्य जीवन पथ से है, इस संसार में, इस जीवन में। जो और जितना कार्य किया गया है उसकी संज्ञा कृत है, जो और जितना करने का शेष है उसे कार्य कहते हैं। अब इस मंत्र का अर्थ सरल व स्पष्ट हो गया।

१. मनुष्य के दो हाथ है, लेकिन उसे चाहिये कि अपने अन्दर सैकड़ों हाथों की शक्ति सम्पादित कर अमित धन कमाये।

२. दो हाथ वाले मानव को चाहिये कि सहस्र हाथों से धन लुटाये। अमित धनराशि प्रदान करे।

३. अपने जीवन में कृत्य व कार्य का सदैव हिसाब रखे।

जीवन का लक्ष्य सिर्फ धनोपार्जन करके उसका सुख भोग करना ही नहीं है। धन साधन है, साध्य नहीं। साधन को साव्य समझने से बड़ी गलती होती है। अतुल धन कमा लेने को ही जीवन का लक्ष्य मत बना लीजिए। इसमें समस्त साधन सन्निहित हैं। धन से समस्त साधन सहज सुलभ हो जाते हैं। धन को धन के लिए ही नहीं वरन् स्व पर हित साधन के लिए प्राप्त कीजिए। धन पाकर भोगविलासी न बनकर सबकी सुख–सुविधा बढ़ाइये। धन अपनी–जानी वस्तु है। सौ हाथों से धन कमाकर सहस्र हाथों से लुटाइये।

धनवान बड़ी तत्परता से धन कमाकर सावधानी से उसका हिसाब मिलाते हैं। वे नित्य ही बही–खाते में आय–व्यय का ब्यौरा अंकित करते हैं। इसी प्रकार आप भी अपना आत्मनिरीक्षण करके अपने जीवन का हिसाब मिलाया कीजिये। नित्य ही एकाग्रता के साथ विचार किया कीजिए, कि कितना जीवन बह गया। कितना शेष है। कितना कार्य हो गया है, कितना शेष है। कितनी साधन की जा चुकी है और कितनी करने को बाकी है। कौन–कौन से व्रत पूरे हो चुके हैं, कितने अभी सिद्ध करने को शेष हैं।

आत्मसाधना मानव जीवन का परम लक्ष्य है। यह स्मरण रखते हुए ईश्वर साधना, स्वाध्याय, सत्संग आदि उत्तम कर्म करके आत्मा को शोधन चाहिये। आत्मसाधना करते हुए ही परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को सुवेवा करनौ चाहिये। आत्ममोन्नति भुलाकर कुछ न करना चाहिए।

सौ हाथों से कमा, सहस्र से लुटा स्वधन को।
उन्नति पर रख ध्यान सदा कृत और कार्य को।।

मोबाइल लगातार अपग्रेड हो रहा है पर सोचने की क्षमता घट रही है–

फोन स्मार्ट लेकिन दिमाग खाली

–डॉ0 हेमंत ठक्कर

आज स्मार्ट फोनों ने हमारा अपहरण कर लिया है औरवे हमारे पूरे अस्तित्व को नियंत्रित करने लगे है। यह काम इतने धमकदार ढंग से हुआ है कि यह चमकीली आयताकार चीज हमारा शाश्वत सहचर और विश्वस्त सहयोगी बन गई है– हमारी शिक्षक, सचिव, अपने सामने हमारे गुनाह कबूल करवाने वाली और गुरू, सब कुछ एक साथ।' जब कोई सुविधा या सहूलियत हमें अपने अस्तित्व से इस कदर अभिन्न लगने लगे तो उस स्थिति से जुड़े मेडिकर खतरे भी बढ़ जाते हैं। इन खतरों में प्रमुख हैं चीजों का संज्ञान लेने, उन्हें जानने–समझने की क्षमता में कमी और याद रखने तथा विश्लेषण करने के कौशल का संपूर्ण समर्पण। न्यूरॉलजिस्ट (स्नायुविज्ञानी) बताते हैं कि "गूगल इफेक्ट" के चलते इधर चिंतकों की एक ऐसी पीढ़ी उभर आयी है, जो किसी जैविक प्रक्रिया के तहत तत्य जुटाने और ज्ञान को संयोजित करने की फिक्र नहीं करते।

हमारे चारों ओर चाहे जितनी भी सूचनाएं मंडराती रहें, लेकिन हमारी स्मृतियों का भंडारण जितना अव्यवस्थित रहता है, सोचने की क्षमता उतनी ही कम हो जाती है। दरअसल शब्दों और विचारों को लेकर तर्क करने, उन्हें पारिभाषित करने और अभिव्यक्ति देने की हमारी मानसिक क्षमता ही मारी जाती है, और सर्च इंजन पर लगातार निर्भरता हमारी इन शक्तियों को प्रायः कुंद करके रख देती है। मनोवैज्ञानिकों ने स्मार्ट फोन की लत के शिकार हो चुके लोगों के बची एक खास तरह की प्रवृत्ति 'स्माट' बेकरारी को रेखांकित किया है।

यह उन लोगों में देखी जाती है, जो अपने फोन से इतना प्यार करते हैं कि इससे जरा भी अलगाव बर्दाश्त नहीं कर पाते। यहां तक कि इसकी मौजूदगी अगर साइलेंट मोड में हो तो भी इस कर कोई अलर्ट आने की स्थिति में आपसी बातचीत या किसी काम में लगे यूजर का ध्यान भंग हो जाता है। जवाब न दे पाने की चिंता से उसका कामकाज प्रभावित होने लगता है। दो अलग–अलग अध्ययन इस बारे में हुए। एक टैक्सस युनिवर्सिटी में प्रोफेसर और सायकॉलजस्टि डॉ० वार्ड तथा वेस्ट कोस्ट में स्थित उनकी टीम द्वारा किया गया, और दूसरा मेन यूनिवर्सिटी के शोधार्थियों द्वारा। बौद्धिक तीक्ष्णता परीक्षा पर आधारित इन दोनों अध्ययनों में यह बात उभर कर आई कि जिन स्टूडेंट्स ने परीक्षा के दौरान अपने फोर दूर रख दिए थे, उनका प्रदर्शन उन विद्यार्थियों के मुकाबले एक ग्रेड बेहतर रहा, जिनका फोन उनके पास था। यहां तक देखा गया कि फोन से उनकी नजदीकी जितनी ज्यादा थी, उनकी दिमागी तीक्ष्णता उतनी ही कम दर्ज की जा सकी। चिकित्सीय दृष्टि से यह भी देखा गया कि स्माट फोन का स्तेमाल करने वाले इसका इस्तेमाल बंद कर दें तो भी उनका स्वास्थ्य खराब होता है। जो मरीज अपना फोन सुन तो लेते हैं लेकिन जवाब देने में अक्षम होते हैं, वे टैकिकार्डिया (धड़कनें तेज होने, नाड़ी तेज चलने की समस्या) के शिकार हो जाते है। उनका ब्लड प्रेशर भी अचानक बहुत बढ़ जाता है। डायबिटीज से पीड़ित लोग जब अपने फोन के गुलाम बन जाते है, तब शुगर पर उनका कंट्रोल बिगड़ जाता है। लंबे समय तक रिंग अलर्ट और वाइब्रेशन सुनने से मानसिक विचलन बढ़ जाता है और मेटाबोलिज्म (खाना पचाने की प्रक्रिया) का बेड़ा गर्क हो जाता है। फोन हमारे दिमाग में इतनी मजबूती से अपनी जगह बना लेते हैं कि हमें पता भी नहीं चलता और हमारे हॉर्मोन और न्यूरोट्रांसमिटर (स्नायुओं के बीच संदेश ले जाने वाले रसायन) अपनी जैविक लय छोड़कर उल्टा–पुल्टा चलने लगते हैं। विकिरण और सेल फोन के रिश्तों की बात ही छोड़ दीजिए, सबसे बड़ा कैंसर यह है कि स्मार्ट फोन हमारे मन–मस्तिष्क पर चुंबक की तरह चिपक गया है। इंटरनेट से हमारा लगातार जुड़ाव, तरह–तरह के ऐप्स और पोर्टेबिलिटी मिलकर हमारी जिंदगी पर राज कर रहे हैं। इससे हमारी नौकरी और रिश्ते प्रभावित हो रहे हैं। जितना भी समय हम जागते हुए बिता रहे हैं, उस पर पूरी तरह इनका कब्जा हो गया है। इस अघोषित विकलांगता के साथ एक खतरनाक विभ्रम भी जुड़ा हुआ है। पिंजरे में बंद दिमाग बड़ी आसानी से 'बुद्धिमता' का मुगालता भी पाल लेता है। आप दो–चार क्लिक मार कर कोई भी सूचना जुटा सकते हैं। इस तरह आसानी से गलत सूचनाओं के फेरे में पड़ जाने का एक ऐतिहासिक संकट भी पैदा हो गया है। लोग बिना कुछ सोचे–समझे इंटरनेट की खबरों पर विश्वास करके उन्हें फैलाने मे जुट जाते हैं, क्योंकि गलत–सही का फैसला कर पाने की उनकी क्षमता पहले ही हवा हो चुकी है। वॉल स्ट्रीट जर्नल (इंस्पिरेशनल) से जुड़े निकलस कार के शब्दों को एक बार फिर उधार लूं तो – डेटा एक ऐसी स्मृति है, जिसका अपना कोई इतिहास नहीं है।' इस छोटे से गैजेट का दास बन जाने के कारण हमने सूचना को ज्ञान में बदलने की अपनी क्षमता खो दी है। हम अपना डिवाइस अपग्रेड करने में (अभी शायद दसवीं बार?) हमेशा तेजी दिखाते हैं, लेकिन अपने दिमाग को इसी हिसाब से सोचने की इजाजत नहीं देते। नतीजा यह होता है कि हमारी बौद्धिक क्षमता दिनोदिन कम होती जाती है।

तो अपने दिमाग और शरीर से अपने मन प्रतिज्ञा कीजिए कि जब आप टहलने जाएंगे, या जिम में होंगे या गहरे विचार विमर्श वाली किसी मीटिंग में होंगे, तब नजर बचाकर, या अवचेतन में भी अपने अस्तित्व का केन्द्र बन चुकी इसी चीज के साथ नहीं उलझे हुए होंगे।

"आत्मा अविनाशी तथा इसका शरीर नाशवान है"

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम मननशील होने से मनुष्य कहलाते हैं। मनन हम सत्यासत्य व उचित अनुचित का ही करते हैं। सत्य व उचित बातों का आचरण करना धर्म और असत्य व अनुचित बातों का आचरण अधर्म होता है। धर्म पर चलना मनुष्य का कर्तव्य है। इसलिए कि इससे हमें सुख मिलेगा और अधर्म का आचरण करेंगे तो वर्तमान नहीं तो भविष्य में दुःख अवश्य ही भोगना पड़ेगा। इसका कारण यह समझ में आता है कि हम जो कर्म करते हैं उसके संस्कार मन व आत्मा पर पड़ते हैं। यह संसार हमारी रचना नहीं है। परमेश्वर की है और यह सृष्टि परमात्मा ने केवल हमारे लिए ही नहीं बनाई है। यह संसार ईश्वर ने सभी जीवात्माओं के लिए उनके जन्म जन्मान्तरों के कर्म फलों के भोग के लिए बनाया है। ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्द है। ईश्वर सत्य अर्थात् सत्तावान है। असत्य उसे कहते हैं जिसकी सत्ता न हो।

जीवात्मा भी सत्तावान होने से सत्य है। अतः सत्यस्वरूप जीवात्मा और परमात्मा दोनों ही सत्य कर्म करने वालें हैं। जीवात्मा जब सत्य कर्मों का त्याग कर प्रलोभन व अविद्यावश असत्य का आचरण करते हैं तो यह ईश्वर की दृष्टि में अधर्म होता है जिसका उसे फल मिलता है जो दुःख रूप होता है। बीज जब वृक्ष रूप में बढ़ता है व उस पर फल लगते हैं तब फलों के पकने पर मनुष्यों व पक्षियों आदि द्वारा उसका भोग होने पर उसकी सार्थकता व पूर्णता होती है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन की सार्थकता भी विद्या व बल की प्राप्ति व उससे दूसरे मनुष्यों व इतर प्राणियों को सुख लाभ कराने में ही होती है। यदि हम किसी पीड़ित व दुःखी मनुष्य की सहायता कर उसे कुछ सुख नहीं पहुंचा सकते तो हमारा मनुष्य कहलाना सार्थक नहीं अपितु निरर्थक प्रतीत होता है। ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य वही है कि जो मननशील होकर अन्यों के सुख दुःख व हानि लाभ को समझे। दूसरों को सुख देना ही मनुष्य का कर्तव्य है और इसी से मनुष्य को भी सुख मिलता है। उसका यश, बल, आयु व विद्या भी बढ़ती है। अतः वेद आदि का स्वाध्याय कर मनुष्यों को ईश्वर प्रेरित सद्कर्मों को ही करना चाहिए।

विज्ञान का नियम है कि संसार में न तो कोई पदार्थ वा वस्तु बनाई जा सकती है और न ही जा सकती है। मूल पदार्थ अनादि व नित्य होते हैं। ईश्वर, जीवात्मा और मूल प्रकृति भी अनादि पदार्थ हैं। इनकी कभी उत्पत्ति नहीं हुई है। यह कभी नष्ट भी नहीं होंगे। उत्पन्न पदार्थों का नाश अर्थात अवस्था परिवर्तन हुआ करता है। जीवात्मा चेतन व अभौतिक पदार्थ है। चेतन पदार्थों का आवश्यक गुण ज्ञान व कर्म होता है। प्रकृति जड़ पदार्थ है। जड़ पदार्थों में जड़ता होती है। इस कारण उनमें ज्ञान व विवेक पूर्ण कर्म नहीं होते। वह चेतन सत्त जीवात्मा व परमात्मा के अधीन रहकर कार्य करती है। हमारा शरीर भौतिक पदार्थों अग्नि, पृथिवी, जल, वायु और आकाश से मिलकर बना है। ईश्वर ने जीवों के लिए मूल प्रकृति में विकृति उत्पन्न पर अपनी सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञता से जीवों की आवश्यकता के अनुरूप उन्हें सुख प्रदान करने के लिए यथापूर्व सृष्टि की रचना की है। जीवों को सुखों का भोग व उन भोगों की प्राप्ति के लिए शुभ व अशुभ करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए सभी जीवात्माओं को शरीरों की आवश्यकता होती है। यह शरीर ईश्वर प्रकृति के पांच भौतिक पदार्थों से बनाकर जीवों को उपलब्ध कराता है।

शरीरों की प्राप्ति में ईश्वर के अतिरिक्त माता–पिता की भी आवयश्यकता होती है। यह ईश्वरीय नियम हैं जिनका नियन्ता वा पालक ईश्वर ही है। यह भौतिक शरीर जीवात्मा का साधन है। जीवात्मा का साध्य तो परमेश्वर की प्राप्ति व मोक्ष प्राप्त करना है जो ईश्वर के साक्षात्कार से होता है। ईश्वर साक्षात्कार सद्ज्ञान की प्राप्ति व उपासना आदि साधना से होता है जिसे जीवात्मा शरीर को साधन बनाकर करता है। हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि यह शरीर एक शिशु के रूप में उत्पन्न होता है और १०० वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। सृष्टि के आरम्भ से संसार में असंख्य मनुष्य उत्पन्न हुए। वह सभी इस नियम अर्थात् १०० वर्ष वा उससे कम आयु में मृत्यु को प्राप्त हो गये। यह क्रम अद्यावधि जारी है और हमेशा रहेगा। इसलिए कि यह भौतिक शरीर इससे अधिक जीवित नहीं रह सकता। कुछ थोड़े से अपवाद हैं अर्थात् कुछ लोग १०० वर्ष से भी अधिक आयु तक जीवित रह सकते हैं परन्तु अमर तो कोई शरीर नहीं होता। इसका नाश अवश्य ही होता है, होता रहा है व आगे भी होता रहेगा।

हमने लिखा है कि शरीर आत्मा का साधन है। शरीर को एक प्रकार का रथ कह सकते हैं। जिस प्रकार रथ का उद्देश्य अपने रथी को किसी लक्ष्य पर पहुंचाना होता है उसी प्रकार से इस शरीर रूपी रथ का उद्देश्य जीवात्मा को परमात्मा का साक्षात्कार करा कर मोक्ष प्राप्त कराना है। यह लक्ष्य वेदाध्ययन, अविद्या की निवृत्ति और अष्टांग योग की साधना से प्राप्त होता है। जिस प्रकार यात्री लक्ष्य की ओर जाते हुए अनेक स्थानों पर रूक कर विश्राम करता है और आगे बढ़ता जाता है। उसी प्रकार से जीवात्मा की मोक्ष की यात्रा में अनेक शरीरों में रहकर साधना करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है।

जिस प्रकार हम यात्रा में किसी स्थान पर रूकते हैं तो अंगले दिन उसी स्थान से यात्राा आरम्भ कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, इसी प्रकार से इस जीवन में हम जो साधन कर लेंगे तो वह हमारे अगले जीवन में काम आयेगी और हम उससे आगे बढ़ेंगे। यदि अगले जीवन का हमने किसी कारण सदुपयोग नहीं किया तो हमारे पूर्व जन्म की साधना भी न्यून व नष्ट हो सकती है। अतः हमें अपनी आत्मा व परमात्मा के सतय स्वरूप को जानकर व मनुष्य जीवन के उद्देश्य को समझकर जीवन व्यतीत करना है। यही वेद और शास्त्रों की शिक्षा है। हमें सावधानी से वेद मार्ग पर चलना है। यदि इस जन्म में लक्ष्य न भी प्राप्त होगा तो अगले जीवन में इस जन्म की साधना तो काम आयेगी ही। कोई एक कक्षा में फेल हो जाता है तो उसे उसी कक्षा में रखा जाता है। पास होने पर अगली कक्षा में चढ़ा दिया जाता है। फेल होने पर उसे निचली कक्षा में उतारा नहीं जाता। इस जन्म के अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप यदि हमें अगले जन्म में मनुष्य जीवन भी मिल गया तो हम पुनः साधना कर सकेंगे।

हमारा शरीर नाशवान है। किसी दिन व कुछ समय बाद इसका पतन व नाश होना ही है। इसलिए हमें शारीरिक सुखों की प्राप्ति पर ध्यान न देकर अपनी आत्मा के सुख व उन्नति पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। शारीरिक सुख का परिणाम दुःख होता है। हमें जितना शारीरिक सुख प्राप्त होगा कालान्तर में उसके प्रभाव से उसी मात्रा में कुछ कम व अधिक भी दुख प्राप्त हो सकता है। अतः हमें आत्मा का सुख प्राप्त करने का प्रयतन करना चाहिये। जो उपासना व वेद ज्ञान से ही मिलता है। ऐसा हम समझते है। पाठक स्वयं विचार करें और अपनी प्रतिक्रिया से हमें लाभान्वित करें। ओ३म् शम्।

पृष्ठ ३ का शेष

श्री पं० हरपाल शास्त्री ...

हल्का व्यायाम आसन, दण्ड बैठक जरूर किया करते थे कि जो व्यायाम नहीं करेगा वह बीमारी के कब्जे में आ जायेगा शीघ्र बूढ़ा होकर मर जायेगा स्नानादि के पश्चात् सन्ध्या में बैठ कर प्रणायाम अवश्य किया करते थे फिर स्वाध्याय करना भी परमधर्म बताया करते थे घी–दूध की मात्रा में कमी नहीं करते थे वे कहते थे कि आयुर्वेद में घृतम् घी से आयु बढ़ती है शक्ति बढ़ती है, बुद्धि और बल भी बढ़ता है, तेज बढ़ता है। सारी विशेषतायें बताया करते थे। आपका देदीव्यमान मुखमण्डल आजान बाहु, ऊँचा कद, आकर्षक आंखे स्वाभाविक रूपेण प्रभाव शाली रहती थी लेकिन विधा–वपुषा, वाचा वस्त्रेण से युक्त होकर अत्यन्त प्रभावशाली हो जाया करती थी।

उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गए हिन्दी रक्षाआन्दोलन गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय मान लिया और जेल यात्रायें भी की। ग्राम–ग्राम में आर्य समाजों की स्थापना करना। स्थापित समाजों में जाकर प्रचार करना, अपना विस्तर साथ रखना, पैदल चलना बिना सवारी ग्रामों में जाकर आर्य सामज का प्रचार करना विरोधियों से शास्त्रार्थ करना उनकी दैनिक दिनचर्या में आ गया था उनमें एक दीवानगी भी सदैव वेद प्रचार के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की।

आज ऐसे समर्पित उपदेशों की आवश्यकता है कभी समाज में किसी पद अथवा संस्था में पड़ने के विषय में कहा करते थे इससे मेरी स्वतंन्त्रा में बाधा आयेगी आज मैं गृहस्थी होते हुए सन्यासी की तरह रहता हूँ फिर मैं गृहस्थी से बड़ा गृहस्थी होकर रह जाउंगा। कार्य करने की क्षमतायें सबमें एक जैसी नहीं होती मेरी मस्ती समाप्त मत करो मेरे ऊपर दया करो ऐसा कहकर अपना पीछा छुडा लेते थे। हापुड़ क्षेत्र में गुरूकुल ततारपुर के माध्यम से जहां भी उत्सव हुए वहां आप अवश्यमेव पधारते रहे घनौरा, श्यामपुर, अटौला, छपकौली, चितौली, मतनौरा, महमूदपुर आदि–आदि ग्रामों में मुझे उनके साथ रहने और सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बड़ौत क्षेत्र में आप अधिक जाते थे उसका पता मुझे पूर्व प्रधान मंत्री चौ० चरण सिंह जी जब गुरूकुल ततारपुर आये थे तब आप वहीं पर थे आपको देखते ही चौधरी साहब नमस्ते करके पूछा शास्त्री जी बैठे है? कुशलता वार्ता में बोले अच्छा हुआ चलो आप मिल गए। बाद में पता चला कि बागपत बड़ौत क्षेत्र के ग्राम–ग्राम में जाकर आपने प्रचार किया है इसके अतिरिक्त हरयाणा, उत्तराखण्ड उ०प्र० में दूर–दूर तक जाकर वेद प्रचार द्वारा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की भावनाओं का प्रचार करके वे अपने को सौभाग्यशाली अनुभव करते रहे हैं।

आपके विचारों से हम जैसे आर्य समाज के सेवक बन सके ऐसे हजारों युवकों के प्रेरणा श्रोत आर्य समाज के यशस्वी प्रचारक वैदिक विद्वान् हरपाल शास्त्री जी वेदवाचस्पति के प्रति नमन करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमें भी ऐसी शक्ति प्रदान करो जो आर्य समाज के कार्य को उसमें बढ़ाकर जीवन सफल बना सकें।

पृष्ठ १ का शेष

आर्य समाज के दस ...

कभी असत्य हो सकती हैं। सत्यस्वरूप परेमश्वर से सत्य विद्याएं प्रकाशित हो सकती थीं और हुई हैं। ये ज्योतिष विद्या, पदार्थ विद्या, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी, वायु, बिजली आदि की सब विद्याएं तथा धर्म, आर्थ, काम, और मोक्ष को देने वाली सभी विद्याएं सत्य हैं और वेदों से निकली हैं। इसलिए इस तीसरे नियम का पहला वाक्य ठीक बताया गया है कि "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।'

"अब जब वेद का पता लग गया है कि यह इतना उत्तम ग्रन्थ है कि संसार का सब ज्ञान यहींसे प्रकाशित हुआ है, तो इसे पढ़ना–पढ़ाना, *सुनना–सुनाना सब श्रेष्ठ पुरूषों अर्थात् आर्यों का* परम धर्म हो ही जाता है। बीज को सुरक्षित रखेंगे तो कभी वृक्ष बना लेंगे, इसलिए सब विद्याओं के बीच रूप इस वेद को नित्य स्वयं पढ़ाना संसार का वेद प्रचार करना है। इस प्रकार वेद की रक्षा आर्यों ने ही आज तक वेद की रक्षा की है और वे ही इसकी रक्षा आगे को भी परम धर्म समझ कर करें।

४. जगत् में जितने झगड़े उत्पन्न होते हैं वे प्रायः हठ, दुराग्रह और असत्य का पक्ष लेकर उत्पन्न होते हैं। यदि सभी लोग सत्य को मानने वाले हों तो झगड़ा होने की सम्भावना बहुत कम होती है, इसलिए सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में तत्पर रहना ही सज्जनों का कार्य है। इससे वेदादि शास्त्रों से सत्य को जानकर उसको ग्रहण करना चाहिए।

५. सत्य को ग्रहण करने के बाद सत्य के अनुसार ही कार्य करना और असत्य कार्य को त्यागना आवश्यक हो जाता है। इसलिए सभी कार्य सत्यासत्य को विचार कर करने चाहिए। तभी व धर्मानुसार कहे जायेंगे।

६. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

संसार में जितनी सभा–समाजें बनी हैं वे अपनी और अपनी बिरादरी की उन्नति करना ही अपना उद्देश्य समझती हैं। कोई ऐसी सभा–समाज नहीं मिलेगी जो कि अधिक से अधिक अपने देश के हित करने के अतिरिक्त सारे जगत् का भी भला कर सके। श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की दृष्टि में सारे जगत का कल्याण करने के लिए किसी का होना आवश्यक था।

इसलिए उन्होंने आर्य समाज का यह छठा नियम रखा। पहले नौ नियमों में सब प्रकार से अपनी और अपने सभासदों की उन्नति करके अन्त में जगत् भर की उन्नति करना आर्यसामज का उद्देश्य रखा है।

कितना व्यापक उद्देश्य है। उपकार का अर्थ आगे की व्याख्या में स्पष्ट किया है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। मनुष्यों का शरीर जब तक निरोग तथा बलवान नहीं होता, तब तक न आत्मा का बल बढ़ता। है न समाज का। सबसे पहले इसलिए शारीरिक उन्नति के उपाय बताये। उन्होंने व्यायाम करने के के लिए अखाडे और व्यायाम शालाएं बनवाकर व्यायाम करने की प्रेरणा भी की। नीरोग और स्वस्थ या बलवान् शरीर के बनाने के लिए आयुर्वेद का प्रचार करें, इस सब उपायों से लोगों के निर्बल शरीर में बल का संचार होगा। शारीरिक बल के साथ आत्मा का बल बढ़ाने के उपाय भी बताये। संध्या, हवन, यज्ञ, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सत्संग, स्वाध्याय, धर्म–कर्म तथा योगाभ्यास करने से आत्मा का बल बढ़ता है। शारीरिक और आत्मिक बल बढ़ाकर लोगों को एकता, संगठन, मिलकर रहना आदि उत्तम जातिहित, देशहित और सर्व प्राणीहित के कार्य कराने से सामाजिक उन्नति होती है। समाज की उन्नति से ही संसार की उन्नति होती है। अतः ये उपकार के काम अपनी जाति और देश के लिए करते हुए सकल संसार के लिए भी अवश्य करें। यही इस नियम का अभिप्राय है।

७. इस नियम से वैर त्याग करना आर्यसमाजियों के लिए श्री स्वामी जी ने आवश्यक बतलाया है। किसी से बैर, विरोध करना ठीक नहीं। *सब प्राणियों से प्रीतिपूर्वक बर्तना आवश्यक है।* प्रीति से उन्नति होती है। अपनी रक्षा के लिए भी हमें सबसे प्रेम से बर्तना चाहिये। हमारी प्रीति को देखकर दूसरे प्राणी भी हमसे प्रीति करेंगे, पर प्रीति का यह अभिप्राय नहीं कि राजा चोरी करने वाले चोर को या खून करने वाले खूनी को भी अपने समान राजसिंहासन पर बैठाये, या लोगों को दुःख देने के लिए उसे खुला छोड़ देवे। इसलिए प्रीति के साथ–साथ धर्मानुसार यथायोग्य शब्द भी जोड़ने पड़े। राजा के मन में चोर, डाकू, खूनी से प्रीति होने पर भी वास्तव में उनका तथा प्रजा का भला इसी में है कि उनको प्रजा से पृथक् बन्दीगृह में रखा जाए। उन्होंने जैसा कर्म किया है वैसा ही उनको दण्ड दिया जाए, न कम और न अधिक।

८. मनुष्य यदि स्वयं विद्या पढ़कर अपना कल्याण करता है और उसके पड़ोसी साथी अविद्या में फंसकर दुःख भोग रहे हैं तो विद्वान पुरूष को सुख नही मिल सकता है। अविद्या–ग्रस्त लोगों के कारण कई दुःख विद्वानों को मिला ही करते हैं, इसलिए यत्न करके भी अविद्या को दूर करना चाहिए और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। जगत में इसी प्रकार से शान्ति रह सकती है।

९. अपनी उन्नति ही में संतुष्ट न होकर सब की उन्नति में सन्तुष्ट होना ही मनुष्यपन है। अपने चारों ओर अवनति का राज्य हो और स्वयं उन्नति करता जाये, तो यह उन्नति बड़ी घातक सिद्ध होती है। अपनी उन्नति का स्वाद तभी मिलता है जब उस उन्नति का महत्व समझने वाला कोई उन्नत व्यक्ति हो। यदि सारा समाज, जाति या देश भी उन्नत कर दिया जावे तब कहना ही क्या है, कि वास्तविक उन्नति का आनन्द तभी पूरा प्राप्त होता है। इसलिए नवम नियम में कहा गया है कि आर्य समाज के प्रत्येक सभासद् को अपनी उन्नति के साथ–साथ सबकी उन्नति करनी चाहिए।

१०. दसवां नियम व्यक्ति की स्वतन्त्रता का वर्णन करता है। मनुष्य अपने कल्याण के लिए जो कुछ करना चाहे उसे करने के लिए पूर स्वतन्त्र है, पर यदि उसके करने के कार्य से अपने समाज की बदनामी हो तो उस काम को न करे। समाज के उन नियमों का अवश्य पालन करना चाहिए, जो कि सबके लिए हितकारी हैं। नियम पालन करने से ही समाज की प्रतिष्ठा बढ़ती है। यदि समाज के लोग ही नियम न मानें तो वह समाज शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। इसलिए सबकी भलाई जिससे हो उस नियम का पालन करना आर्यसमाज के सभासदों का कर्त्वव्य है। इस प्रकार से ये दस नियम ऋषि दयानन्द ने ऐसे बनाये हैं जिनको प्रत्येक बुद्धिमान सत्य पुरूष उत्तम मानेगा। नियमों में जहां वेद और ईश्वर को सब धर्मों का मूल तथा सब विद्या का कारण माना है वहां पर ऐसे धर्म पर चलना ही प्रत्येक मनुष्य और समाज का कर्त्तव्य कहा गया है। ये नियम ऐसे बुद्धिमत्ता से बनाये गये हैं कि इनके ऊपर विचार करने से प्रत्येक मनुष्य आर्यसमाज में

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

६, ७ एवं ८ जनवरी २०१८ को सम्भल में आर्य समाज मन्दिर के निकट श्री प्रदीप जी वर्मा आर्य के घर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ यज्ञ के ब्रह्म सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक गुरूकुलपूठ, गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ रहे वेदपाठ गुरूकुल के छात्रों ने किया संजीव रूप बदायूं के प्रतिदिन भजन हुए। पूर्णाहुति पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० उपप्रधान श्री ज्ञानेन्द्र जी गांधी एवं मेरठ से श्री वीरेन्द्र जी रत्नम् के प्रभावशाली प्रवचन हुए। स्वामी जी ने बुराइयां छुड़ाने की प्रतिज्ञा कराई तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया यजमान, दीपक वर्मा, प्रवीण वर्मा (मुल्लू) मानेन्द्र सोनी गुडगांवा रहे संयोजन जयगोपाल शास्त्री कुन्दर की ने किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर्य समाज सरायतरीन, बहजोई चन्दौसी, मुरादाबाद, कयासी, स्थानों से श्रीमती आशा आर्य तेजपाल आर्य के अतिरिक्त ठाकुर सिंह आर्य, आचार्य दीपक गु० चन्दौसी, एच वाड़ा से हरिओम जी, सिंहपुर से चौ० भगवन्त सिंह के परिवार से भी उपस्थिति रही, चन्द्रभानु सिंह ने सामग्री आदि सेवा में योगदान किया। जिला सभा के मन्त्री दयाशंकर आर्य के सभी साथी, मयंक आर्य, विनोद आदि–आदि क्षेत्र से प्रतिनिधित्व किया। भोजन की व्यवस्था अति सुन्दर रही। आर्य समाज सम्भल के सभी पदाधिकारियों का भी पूर्ण सहयोग रहा सभी को यज्ञ सफलता की शुभकामनायें।

–आशा आर्या, उपदेशिका
आर्य समाज अमरोहा

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

७, ८, ६, १० जनवरी २०१८ को आर्य समाज अनूप शहर बु० शहर के कर्मठ सहयोगी योग शिक्षक श्री रविन्द्र भारद्वाज जी ने अपने निवास पर अथर्ववेद परायण यज्ञ किया वैदिक विद्वान रहे वेदपाठी गुरूकुल पूठ के ब्र० कपिल शास्त्री रहे कार्यक्रम में सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने भी शोभाबढ़ाई तथा अथर्ववेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने बताया प्रत्येक समस्या का समाधान वेदों में हैं। वेद के अभाव में ही वेदनायें बढ़ती जा रही हैं अतः "वेदों की ओर लौटो" का नारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दिया था। ब्रह्मा जी एवं यजमान ने स्वामी जी का स्वागत कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में स्वामी दिव्यानन्द जी डॉ वीरेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र चौहान, गंगा प्रसाद आर्य निराला, म० रामवीर आर्य डूगरा तथा क्षेत्र से आर्य समाजों के सैकड़ों श्रद्धालु यज्ञ प्रेमी आर्यों ने यज्ञ में आकर आहुतियां प्रदान की। भारद्वाज जी ने अब तक यजुर्वेद सामवेद अथर्व वेद पारायण कर लिए हैं अब ऋग्वेद भी पूरा करने का व्रत लिया है ऐसे यज्ञ प्रेमी का प्रभु विश्वास एवं यज्ञ के प्रति आस्था देखकर पुराने आर्य पुरूषों की याद ताजी हो जाती है ऐसे पवित्र परिवार के लिए बहुत–बहुत शुभकामनायें।

सुदेश आर्या स्याना उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य समाज अनूप शहर के कार्यक्रम में सभा मंत्री जी का सम्मान करते हुए आर्यजन

आर्य समाज सम्भल में प्रदीप वर्मा जी के यहाँ ऋग्वेद पारायण कराते हुए सभा मन्त्री जी

वैदिक पुत्री पाठशाला मुजफ्फरनगर में अथर्ववेद पारायण में भाग लेते हुए सभा कोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार जी

॥ ओ३म्॥
हरिः पवित्रे अर्षति । ऋग्वेद-9-3-9
दुःखों को हरने वाला परमात्मा पवित्र हृदय में प्रगट होता है, अतः पवित्र विचार ही रखने चाहिए।
वार्षिकोत्सव-108 कुण्डीय देवयज्ञ एवं वेदकथा
दिनांक : 21 एवं 22 जनवरी, 2018 (रविवार एवं सोमवार)
स्थान : आर्ष गुरुकुलम् विद्यामन्दिर, गुरुकुल नगरम्
रसूलपुर कायस्थ, निकट शुक्ला चौराहा, जानकीपुरम्-लखनऊ
कार्यक्रम विवरण
प्रातः 8:00 बजे से अपराह्न 3:10 बजे तक - 108 कुण्डीय यज्ञ, भजनोपदेश, प्रवचन एवं परिपूर्ण जलपान तथा भोजन
निवेदक : सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, लखनऊ
सहयोगी संस्था : जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ
सम्पर्क सूत्र -
7783937455, 9161053864, 9839950121, 9415610502

ओ३म्

संस्थापित–1885 फोन नं0–0522–2286328

श्रीमद्दयानन्दाब्द–193

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक– 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार
दिन– शनिवार एवं रविवार
(तिथि–माघ शुक्ल दशमी एवं एकादशी) सम्वत्–2074)
अधिवेशन स्थल– सभा भवन प्रांगण– 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी / अन्तरंग सदस्य / प्रतिनिधि / आर्य बन्धुओं / बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः 08.00 बजे से सायं 06.00 बजे तक डॉ0 धीरज सिंह–का0 प्रधान / प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों / जिला सभाओं / शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में का0 प्रधान / प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद / सदस्यों का रू0 5 / – प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।
(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों / भवनों / अतिथि गृहों / विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।
(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25 / –।
(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य / सभासद रू0 2 / – वार्षिक।
(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25 / – इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।
(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100 / – अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000 / – के हिसाब से।
(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100 / – दशांश एक मुश्त तथा रू0 100 / – आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25 / – भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।
(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी। इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–15 जनवरी, 2018 तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। **बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ** के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेशनीय एजेण्डा नियमानुसार समय से भेज दिये जायेंगे। सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक / प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः–

दिनांक 27–01–2018 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल 8.00 बजे	–	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल 10.00 बजे	–	ध्वजारोहण– माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल 11.00 बजे	–	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।

1 बजे भोजनावकाश

द्वितीय सत्र

अपराह्न 02.00 बजे से	–	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल 6.00 बजे	–	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल 7.00 से 9.00	–	सामाजिक कुरीतियॉं, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल (मद्यनिषेध / नशाबंदी / दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि 9.00 बजे	–	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिवस दिनांक 28–01–2018 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल 8.00 से 9.00 बजे तक–		राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
पूर्वाह्न 11.00 बजे से	–	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
"	–	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
"	–	वार्षिक वृत्तांत एवं आय–व्यय का लेखा प्रस्तुत।
"	–	अनुमानित आय–व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
दोपहर 1.00 बजे	–	भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

प्रातःकाल 01.00 बजे से	–	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
अपराह्न 2.00 बजे से	–	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं 4.00 बजे	–	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(डॉ0 धीरज सिंह) सभा प्रधान
(अरविन्द कुमार) कोषाध्यक्ष
(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती) सभा मन्त्री

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।